सम्पदा

मध्यप्रदेश की जनजातीय
सांस्कृतिक पर म्पर ा
का साक्ष्य

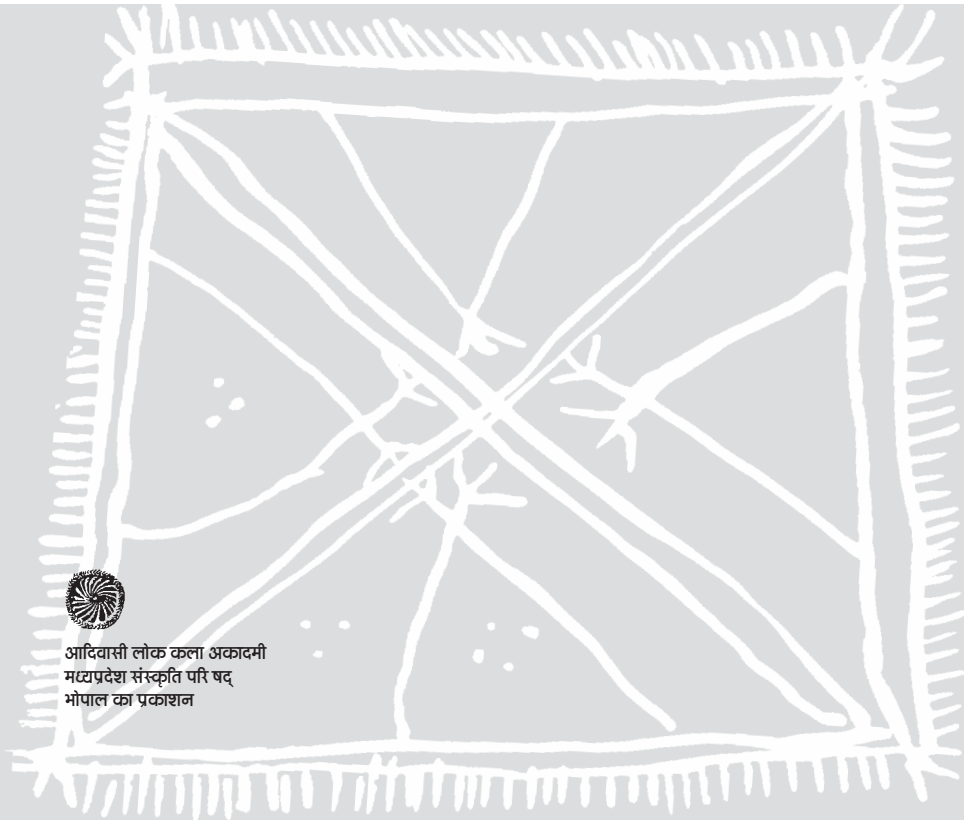

आदिवासी लोक कला अकादमी
मध्यप्रदेश संस्कृति परिषद्
भोपाल का प्रकाशन

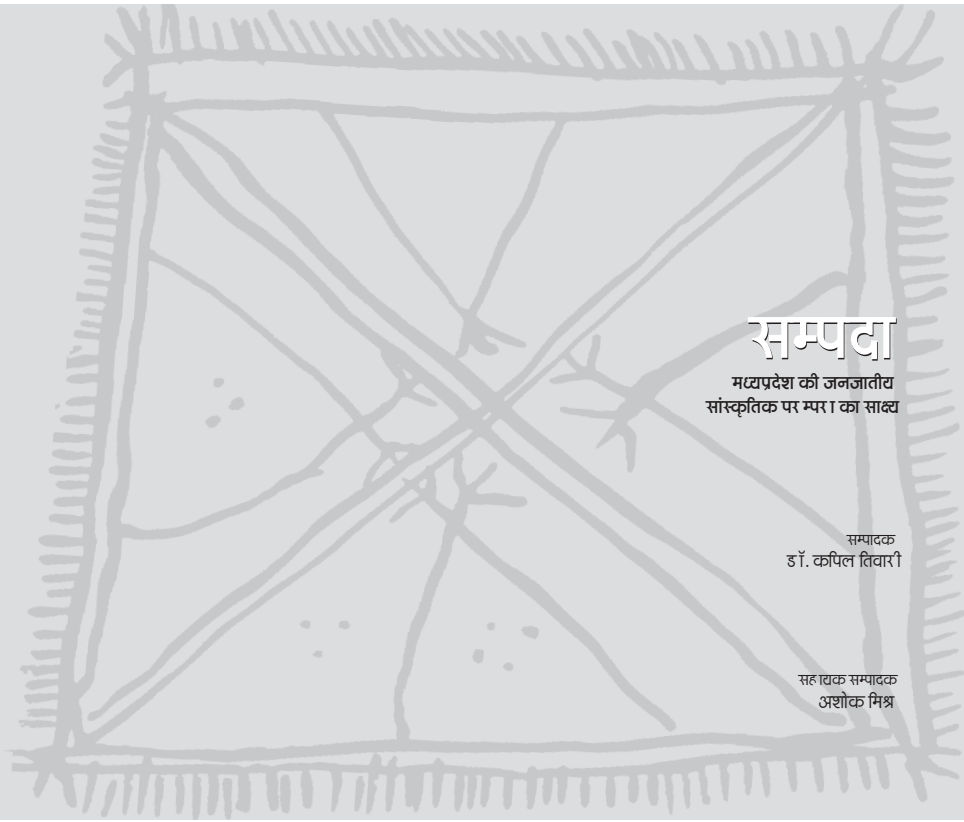

सम्पदा

मध्यप्रदेश की जनजातीय सांस्कृतिक परम्परा का साक्ष्य

सम्पादक
डॉ. कपिल तिवारी

सहायक सम्पादक
अशोक मिश्र

प्रकाशक - **आदिवासी लोक कला अकादमी**
मध्यप्रदेश संस्कृति परि षद्
मुख्य मूजी संस्कृति भवन, आधार तल, बाण गंगा, भोपाल-462003 मध्यप्रदेश, भार त
फोन - 0755-2551878, 2760668

प्रकाशन वर्ष - **वर्ष 2006 द्वितीय संस्कर ण**

स्वत्वाधिकार - **आदिवासी लोक कला अकादमी**
मध्यप्रदेश संस्कृति परि षद्

शब्दांकन - **आदिवासी लोक कला अकादमी**
मध्यप्रदेश संस्कृति परि षद्

छायाचित्र - **सर्वश्री घनश्याम शर्मा, वसन्त निर गुणे, डॉ धर्मेन्द्र पारे , श्रीमती शिखा पाटीदार , विवेक**

चित्रांकन - **श्रीमती भूरीबाई, श्री रामसिंह उ वेंती**

प्लानिंग - **अमन ग्राफिक्स, भोपाल**

आवर ण -

मुद्रण - **प्रिंटंका आफसेट , भोपाल**

मूल्य - 300/- रुपये तीन सौ केवल

❒ पुस्तक से संबंधित विवादों का न्यायालयीन कार्यक्षेत्र भोपाल होगा।
❒ पुस्तक में प्रकाशित समस्त सामग्री लेखक/संकलनकर्ता की है , आवश्यक नहीं की प्रकाशक इससे सह मत हो।
❒ प्रकाशित सामग्री का किसी भी माध्यम में उपयोग करने के पूर्व अकादमी की अनुमति लेना आवश्यक होगी।

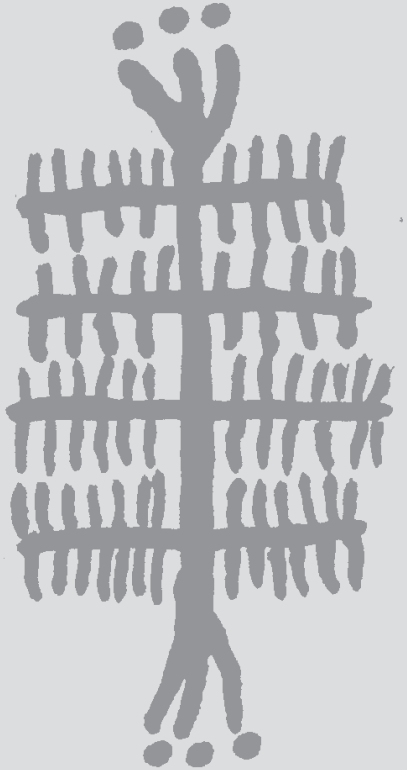

कोर कू वसन्त निर गुणे / 11

बैगा वसन्त निर गुणे / 77

भील महे शचन्द्र शांडि ल्य / 191

गोंड शेख गुलाब / 297

भारि या वसन्त निर गुणे / 405

सह रि या वसन्त निर गुणे / 501

ढोल महे शचन्द्र शांडि ल्य / 601

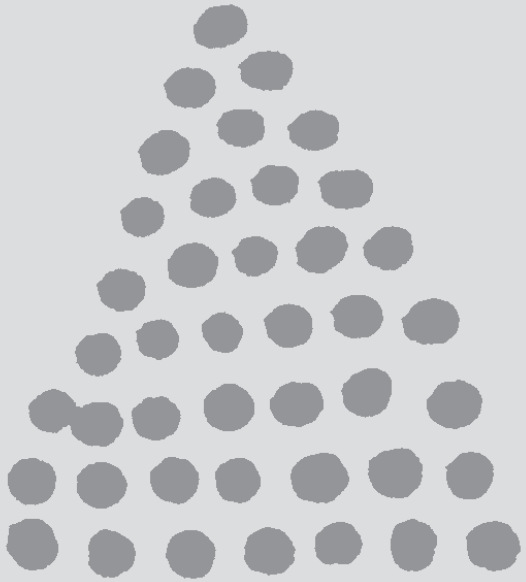

मध्यप्रदेश की जनजातीय कला और सांस्कृतिक परम्परा के सर्वेक्षण और दस्तावेजीकरण का काम, आदिवासी लोक कला अकादमी (पूर्व नाम मध्यप्रदेश आदिवासी लोक कला परिषद्) ने लगभग बाईस-तेईस वर्ष पहले शुरू किया था। इसके पूर्व सामान्यत: जनजातीय क्षेत्रों में सर्वेक्षण और शोध के कार्य सामाजिक और आर्थिक क्षेत्रों में ही होते थे। जनजातियों की जनसंख्या, खेती-किसानी के तरीके, वनोपज संग्रह, वन और भूमि पर अधिकार की स्थिति और उसकी समस्याएँ, जनजातीय क्षेत्रों में शिक्षा और उसके विस्तार की समस्याएँ तथा स्वास्थ सम्बन्धी सर्वेक्षण ही इन क्षेत्रों में अन्वेषण की मूल दिशा थे।

संस्कृति विभाग ने जब आदिवासी लोक कला अकादमी के रूप में पारम्परिक कलाओं की देश की पहली स्वतंत्र राज्य अकादमी की स्थापना की, तब से जनजातीय कला और सांस्कृतिक परम्परा के सर्वेक्षण और दस्तावेजीकरण का काम प्रदेश में भी किया जाने लगा। अकादमी के सर्वेक्षण शाखा से जुड़े लोगों और स्वतंत्र अध्येताओं ने भी अकादमी के लिए सर्वेक्षण और विनिबंध लेखन किया। शुरुआती वर्षों में गौंड, बैगा, भील, कोरकू, सहरिया, कोल, भिम्मा तथा भारिया जनजातियों के साथ छत्तीसगढ़ के बस्तर क्षेत्र की मुरिया और दण्डामी माड़िया जनजातियों के सर्वेक्षण पर आधारित विनिबंधों का प्रकाशन अकादमी ने किया। इन विनिबंधों में मूलत: जनजातियों की मूल पहचान, सांस्कृतिक परम्परा की विशिष्टता के लक्षणों की खोज, प्रदर्शनकारी और रूपंकर कलाएँ, पर्व-त्यौहार और मेले, धार्मिक आस्था और अनुष्ठान, जनजातीय देवलोक और वाचिक परम्परा के कुछ प्रमुख रूपों के नमूनों का संग्रह करना शामिल था। एक विशिष्ट जनजातीय परिवेश और सांस्कृतिक परम्परा की अन्तर्छाया में कोई जनजातीय कलारूप आकार लेता है, वह एक खास तरह की स्थानिकता और सांस्कृतिक बोध को अभिव्यक्त करता है, जैसा दूसरी किसी परम्परा में संभव नहीं होता। रूपों

के बीच भी एक विशेष अन्तर्क्रिया देखने में आती हैं। जनजातीय नृत्यों का संगीत परम्परा और मौखिक साहित्य के साथ, शिल्प परम्परा का चित्रों और जनजातीय आध्यात्मिक विश्वासों के साथ गहरा सम्बन्ध है। जनजातीय कथा या गाथाएँ विशेष स्वैर कल्पनात्मक मिथकीय और टोटमिक धारणाओं, प्रकृति और पितरों की विश्वास परम्पराओं तथा जनजातीय स्थानिक देवलोक आस्थाओं को प्रकट करती है। स्मृति और चेतनागत जगत में सक्रिय इन अमूर्त्त प्रेरणाओं का प्रक्षेपण, चित्रों और शिल्पों में होता है। यहाँ तक कि इनका प्रभाव कुछ प्रदर्शनकारी कलाओं विशेष रूप से नृत्यों में भी स्पष्ट दिखता है। कहने का आशय है कि जनजातीय कला परम्परा में रूपों की स्वायत्तता उतनी महत्त्वपूर्ण नहीं, जितनी सांस्कृतिक परम्परा की समग्रता का बोध है जिसमें से होकर एक नृत्य या शिल्प आकार ग्रहण करता है।

इन छोटे विनिबंधों का प्रकाशन, इस अर्थ में बड़ा महत्त्वपूर्ण था कि मध्यप्रदेश में जनजातीय कला परम्परा को, इसके साथ एक विशिष्ट जनजातीय समग्रता में देखने की शुरुआत हुई। इसके बाद देश के कुछ अन्य शोधार्थियों, मध्यप्रदेश में समाज विज्ञान और नृतत्त्व अध्ययन से जुड़े लोगों ने भी इस दिशा में काम शुरू किया, अर्थात् प्राकृतिक और सामाजिक नृतत्त्व के अध्ययन क्षेत्रों से भी-सांस्कृतिक नृतत्त्व की ओर ध्यान दिया गया। बीस-पच्चीस वर्षों से इस क्षेत्र में लगातार सक्रियता का यह सुफल है कि हम प्रदेश की जनजातीय संस्कृति को उसकी विशिष्टता और कलारूपों को पूरे जनजातीय सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य में समझने लगे।

मध्यप्रदेश की प्रमुख जनजातियों के नृत्य रूप और शिल्प अब देश भर में सुपरिचित और स्थापित हैं, अनेक जनजातीय चित्रकारों ने आदिवासी समकालीन चित्र परम्परा में खुद को एक श्रेष्ठ चित्रकार के रूप में स्थापित किया है। इनका काम देश के प्रमुख कला संग्रहालयों और रूचि रखने वाले देशी-विदेशी कला प्रेमियों के संग्रह में सुरक्षित हैं तथा कला आलोचकों का ध्यान भी इस ओर गया है। हम इसे एक बड़ी उपलब्धि मानते हैं।

यह अकादमी के कार्य का पहला चरण था।

इस यात्रा में हमे आगे विषय केन्द्रित अध्ययनों का आरम्भ करना था। जनजातीय वाचिक परम्परा, जनजातीय शिल्प, जनजातीय देवलोक, जनजातीय संगीत विशेष रूप से वाद्य परम्परा, जनजातीय गोदने, जनजातीय आभूषण और सज्जा परम्परा, जनजातीय मुखौटे आदि विषय इसमें शामिल हैं। इन सर्वेक्षणों और संकलन का कार्य आने वाले वर्षों में प्रकाशित होगा। इस कार्य में अकादमी के अध्येताओं के अलावा पहली बार एक ऐसी पीढ़ी भी जुड़ी है जो स्वतंत्र रूप से इन क्षेत्रों में काम करती है, कुछ ऐसे जनजातीय युवा हैं जिन्होंने पहले कभी इस प्रकार सर्वे और लेखन का कार्य नहीं किया है यह अच्छा लक्षण है, किसी और के बजाय जनजातीय लोग अथवा जनजातीय क्षेत्रों में रहने वाले अन्य युवा अध्येता इस कार्य से जुड़ रहे हैं। उनमें यह चेतना पैदा हो रही है कि परम्परा का अध्ययन

और संरक्षण आवश्यक है। विषय केन्द्रित अध्ययन और सर्वेक्षण के कार्य का आरम्भ तत्सम्बन्धी संकलनों से किया गया है। अकादमी के पास जनजातीय शिल्पों-मिट्टी, धातु, काष्ठ, वस्त्र, लौह आदि शिल्प माध्यमों के रूपाकारों, जनजातीय मुखौटों, वाद्ययंत्रों, आभूषणों तथा गोदना अभिप्रायों और चित्रों का एक विशाल संग्रह है। इस संग्रह का एक हिस्सा अकादमी द्वारा खजुराहो में स्थापित 'आदिवर्त' जनजातीय और लोक कला राज्य संग्रहालय में प्रदर्शित है।

लोक और जनजातीय शिल्प पर केन्द्रित विनिबंधों का प्रकाशन अकादमी द्वारा किया गया है इनमें मध्यप्रदेश के मिट्टी शिल्प, मध्यप्रदेश के धातु शिल्प तथा मध्यप्रदेश के काष्ठ शिल्प मोनोग्राफ प्रकाशित हो चुके हैं, इस वर्ष अकादमी मध्यप्रदेश की जनजातीय और लोक वस्त्र परम्परा पर केन्द्रित विनिबंध का प्रकाशन करेगी।

जनजातीय देवलोक के अध्ययन के क्रम में अकादमी ने प्रदेश की कोरकू जनजाति के देवलोक के समग्र सर्वेक्षण का कार्य पूरा किया है और इसी वर्ष यह विनिबंध अंग्रेजी तथा हिन्दी में एक साथ प्रकाशित हो रहा है। मध्यप्रदेश की गोंड जनजाति तथा भील जनजाति के देवलोक का सर्वेक्षण कार्य किया जा रहा है, अगले वर्षों में इन विषयों पर भी ग्रंथ प्रकाशित होंगे। जनजातीय परम्परा के काष्ठ मुखौटों पर आधारित एक चित्र पुस्तक 'प्रतिरूप' अकादमी ने प्रकाशित की है। जनजातीय गोदने और गोदना परम्परा तथा जनजातीय और लोक आभूषणों पर केन्द्रित दो विशेष अंक चौमासा पत्रिका में प्रकाशित किये गये हैं।

इसी प्रकार वाचिक परम्परा के संकलन के कार्य को भी अधिक विषय केन्द्रित किया गया है। जनजातीय बोलियों में पारम्परिक गीतों, कथाओं तथा गाथाओं का अलग-अलग संग्रह किया जा रहा है। गोंड तथा कोरकू जनजातियों के गीत, भील जनजाति की कथाओं का संग्रह प्रकाशित हो चुका है तथा जनजातीय गाथाओं का संग्रह प्रकाशित किया जा रहा है। जनजातीय वाचिक परम्परा का संग्रह किया जाना इसलिए भी बहुत आवश्यक है कि इन आदिवासी बोलियों की अपनी कोई लिपि नहीं है, वह सारी शब्द परम्परा का एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक पारम्परिक रूप से हस्तांतरित होती आयी है। अनेक कारणों से इस प्रक्रिया में बाधा पैदा हुई है जैसे आधुनिक शिक्षा, संचार माध्यम तथा शक्तिशाली भाषा समूहों के प्रभाव आदि से। ग्रामीण क्षेत्रों से शहरों में काम-धंधे की तलाश में आये युवा बेरोजगारों का, सांस्कृतिक बोध और परम्परा के हस्तांतरण के कार्य से विचलन आर्थिक कारणों और विवशताओं के चलते हुआ है। कारण अनेक हैं लेकिन यह सच है कि मौखिक संज्ञान की परम्परा खतरे में है, चूँकि यह संस्कृति का भौतिक रूप नहीं होता इसलिए इसके संरक्षण के अवसर भी कम हैं। जिस तरह हम व्यक्तिगत और संस्थागत प्रयासों से, सरकार अथवा निजी क्षेत्र की आर्थिक सहायता से शिल्पों और प्रदर्शनकारी कलाओं के बचाने और संवर्धन के लिए यत्न कर सकते हैं वैसा वाचिक संज्ञान की रक्षा के लिए कठिन होगा, क्योंकि वह कार्य दिखता नहीं है कोई उसे अपनी प्राथमिकता नहीं मानता। जनजातीय वाचिक ज्ञान, केवल साहित्यक मौखिक परम्परा नहीं है बल्कि जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में यह ज्ञान परम्परा वाचिक है। पिछले अनेक वर्षों से भारतीय समाज में एक विचित्र और

अपरिभाषित आधुनिकता के चलते भारतीय लोक और जनजातीय समुदायों की देशज ज्ञान प्रणालियाँ अप्रमाणिक, अवैज्ञानिक और पुराने रूढ़ रूपों की भाँति मानकर उपेक्षा और यहाँ तक कि अपमान का शिकार रही हैं। विकास के सभी क्षेत्रों में पश्चिमी दृष्टि, रूपों, पद्धतियों, प्रणालियों और उद्यमों यहाँ तक कि विचार और ज्ञान के क्षेत्रों तक प्रभावी रही हैं। ऐसी स्थिति में लोक और जनजातीय समुदायों की ज्ञान परम्परा उपेक्षित रही है। हमें न केवल मौखिक साहित्य रूपों बल्कि अन्य क्षेत्रों में भी जनजातीय पारम्परिक देशज ज्ञान की रक्षा तुरन्त करना चाहिए, हमारे काम में यह सर्वोच्च प्राथमिकता भी होना चाहिए। अकादमी ने अपने सीमित साधनों से इस कार्य को आरंभ किया है और आदिवासी साहित्य परम्परा के कुछ रूपों का संकलन और प्रकाशन भी किया है।

मध्यप्रदेश की प्रमुख जनजातियों के पारम्परिक नृत्यों पर केन्द्रित एक पुस्तक भी अकादमी शीघ्र प्रकाशित करेगी। जनजातीय नृत्यों पर एकाग्र एक वीडियो सी.डी. अकादमी ने तैयार की है। संभवतः इस क्षेत्र में यह, देश में पहला प्रयास है। मध्यप्रदेश में जनजातीय सांस्कृतिक परम्परा के सर्वेक्षण, दस्तावेजीकरण और प्रकाशन के क्षेत्र में अकादमी के कार्य ने, इस क्षेत्र के सभी अध्येताओं का ध्यान आकर्षित किया है, इन विषयों पर शोध कार्य करने वाले विद्यार्थियों के लिए विपुल संदर्भ सामग्री उपलब्ध हुई है।

पिछले वर्षों में समय-समय पर जिन जनजातियों के सर्वेक्षण विनिबंध प्रकाशित हुए थे, उन्हें इस ग्रंथ में एक साथ प्रस्तुत किया गया है। इन विनिबंधों के दूसरे संस्करणों का प्रकाशन न होने से वे अर्से से उपलब्ध नहीं थे। अब सभी सामग्री एक साथ प्रकाशित हो रही है, जिससे हम जनजातियों के संस्कृति की आपसी समानता, विशिष्टता और अन्तर्सूत्रों को एक साथ देख-समझ सकते हैं।

विनिबंधों के सभी लेखकों के प्रति अकादमी अपनी कृतज्ञता व्यक्त करती है। हमें आशा है कि यह प्रकाशन पाठकों के लिए उपयोगी और रूचिकर होगा।

-कपिल तिवारी